

What is forgetting? Describe its causes.
विस्मरण क्या है इसके कारणों का वर्णन कीजिए।

संस्थागत स्तर पर विपरीत होने वाली उभय ही विस्मरण
व्यवस्था है जो सर्वप्रथम यह कि जब व्यक्ति सीखे गए विषय को वर्तमान
वेक के छात्र के अक्षर हो जाता है तो नहीं विस्मरण देखा है यह
सर्वप्रथम नहीं है क्योंकि हमें 2 व्यक्ति किसी विषय का प्रभाव पर
ने वाले में अक्षर हो जाता है पर बाद में उसका अक्षर से प्रभाव का
होता है। या जैसे ही उसे पहचानने की शक्ति हो लेता है कि उसे
विस्मरण की एक अक्षर धारण करने की अक्षर का कारण अधिक प्रतीत होता है
इसी कारण को धारण के लिए हुए Reber and Reber 2001 ने एक परिभाषित
करने हुए बताया कि - "forgetting is the loss of the ability to
recall, recognize or reproduce that which was previously
learned." यानी पहले जो कुछ सीखा गया था उसको प्रभाव करने, पहचानने
या दोहराने की क्षमता की हानि ही विस्मरण है।

इस प्रकार प्रकृत है यह एक अक्षर प्रकृत है जिसमें समाधान के
लिए प्रयोग के लिए प्रकृत से ही प्रकृत शुरू रहे हैं इनके प्रकृत से ही
कुछ कारणों से इन लोगों ने ही प्रकृत के विनाशित किया है - का
स्पष्ट किया जा रहा है कि प्रकृत कुछ प्रकृत निम्न लिखित है।

1. Nature of learned materials सीखे जाने वाली विषय का स्वरूप -
सीखे जाने वाली विषय का स्वरूप ही विस्मरण का प्रमुख कारण है
ये विषय सार्थक तथा विरथक स्वरूप के रूप होते हैं जो कि सीखने वाले
अपने अध्ययन के आधार पर स्पष्ट कर दिया है कि जब सीखे जाने
वाली विषय विरथक स्वरूप का होता है तो उसका विस्मरण ही अधिक होता
है तथा इससे सीखने में ही अधिक प्रकृत तथा प्रकृत होता है।

किंगले तथा जॉरी (Kingley and Jarry) 1957 ने स्पष्ट किया कि निर्बंध पदों को सीखने में बस सिर्फ प्रयास ही अध्ययन नहीं करता बल्कि सार्थक विषयों की अपेक्षा इनका विस्तार भी जल्द होगा है जिसमें दो प्रमुख कारण हैं - पहला वो यह कि बड़ी व्यक्ति निर्बंध पदों को समझकर नहीं बल्कि रट कर ~~सिखा~~ सीखा है फलतः सुदृढ़ स्मृति चिह्न का निर्माण नहीं हो पाता है फलतः ऐसे विषयों को व्यक्ति अधिक दिनों तक ध्यान नहीं रखता है और सीखे गए विषयों को पुनः जाना है। और दूसरा कारण यह कि निर्बंध पदों में व्यक्ति की रुचि नहीं रहने के कारण व्यक्ति ~~को~~ उससे साफ कोई सार्थक साख्यक नहीं कर पाता है परिणामतः विस्तार भी धरना धरित हो जाती है।

2. Degree of Learning. सीखने की मात्रा -

बिना विषय को सीखने के लिए मिलने प्रयास की आवश्यकता होती है - इससे अधिक प्रयास तक सीखा जाता है तो इसे इसे आतिशय ब्रह्म ज्ञान है over learning कहा जाता है और जब आवश्यकता से कम प्रयास में सीखा जाता है तो इसे - कुछ शिष्ट under learning कहा जाता है आतिशय होके के बाद एसे विषय का स्मृति चिह्न स्वच्छ तथा सुदृढ़ बनता है जिसका एसे विषय का विस्तार कम होता है लेकिन जब काफी कम प्रयास में ही किसी विषय को सीखा जाता है तो समजो स्मृति चिह्न का निर्माण होगा है फलतः एसे विषय का विस्तार जल्द होगा है

3. Length of learnt material - सीखे गए विषय की लम्बाई -

सीखे गए विषय की लम्बाई भी स्मृति चिह्न का प्रभाव भी स्मृति चिह्न पर पड़ता है जो विस्तार को प्रभावित करता है अध्याय प्रमाणित करते हैं कि लम्बे स्वल्प वाले विषयों में ध्यान छोटे स्वल्प वाले विषयों की अपेक्षा अधिक होती है और जो दो विषयों की अपेक्षा लम्बे विषयों को सीखने के लिए कम-प्रकार का प्रयास करे

की आवश्यकता होगी है जिससे गजब स्टाटिस्टिक का निर्माण होता है फलतः कठमे स्वल्प वाले विषय का विस्तार विलंब से होता है जबकि छोटे स्वल्प वाले विषय के लिए एविंगटन के अपने अध्ययन में पाया कि 36 गिर्य पदों का विस्तार 24 घंटे बाद 42% जबकि 12 गिर्य पदों का विस्तार 24 घंटे बाद 65% हुआ। इससे भी स्पष्ट होता है कि कठमे स्वल्प वाले विषय का विस्तार छोटे स्वल्प के विषय की अपेक्षा विलंब से होती है।

4. Methods of learning सीखने की विधियाँ -

सीखी जाने सीखने की विधियों का प्रभाव भी विस्तार पर पड़ता है जब उपरि विधि का प्रयोग किया सीखने की अनेक विधियाँ हैं जब आवश्यकतानुसार उपरि विधियों का प्रयोग किया जाता है तो विस्तार का धारित होती है। विटेकर (Whittaker) 1970 ने बताया कि कुछ व्यायाम - व्यायाम परिस्थितियों को छोड़कर विस्तार विधि (distributed method) तथा अंश विधि (part method) से सीखे गए विषय की व्यापक अभिप्राय प्राप्त करने वाली रहती है। क्योंकि इससे उत्पन्न स्टाटिस्टिक काफी प्रबल प्रकृत बने हैं फलतः अव्यक्त विधि की अपेक्षा इसका विस्तार विलंब से होता है। इतीरत सामिप्राय शिक्षण (intentional learning) की तुलना में (incidental learning) प्रासंगिक शिक्षण का विस्तार जल्द होता है क्योंकि सामिप्राय शिक्षण में ऊँचे आवेदन (eg. involvement) अधिक होता है जो एव प्रेरण का उत्पन्न कर देता है जिससे ध्यान गजबत रखा जाता है फलतः विस्तार भी घटता है धारित होती है।

5. Retro active inhibition (RAI) - पूर्वोन्मुख अवरोध

पूर्वोन्मुख अवरोध RAI भी विस्तार का बहुत बड़ा कारण है। जब व्यक्ति एक विषय को सीखने के बाद दूसरा विषय सीखने लगता है तो इससे विषय का वापस प्रभाव पहले विषय के ध्यान पर पड़ता है इसी अवरोधक प्रभाव को पूर्वोन्मुख अवरोध कहा जाता है।

सबसे पहले मूलक पिल्लेक ने इन स्पष्ट होते हुए बताया कि सभ्य अंतराल विस्तार का काम नहीं है। वह सभ्य अंतराल ने ब्यक्ति होने वाली बतना यानि अन्तर्वैशिश्व-शिक्षण (interpolated learning) ही विस्तार का वास्तविक कारण है इन्होंने स्पष्ट किया कि काम ~~समय~~ समय के बाद ही स्थिति बिन्दु के बारे में लिया जाती रहती है और एसे में जब व्यक्ति एक विषय दो सीखने के बाद सो जाता है या विस्तार होता है तो निर्मित स्थिति बिन्दु काफी सबल तथा मजबूत बनती है लेकिन जब व्यक्ति एक विषय दो सीखने के दुरंत बाद दूसरा विषय सीखने लगता है तो इससे विषय का शिक्षण पहले विषय के शिक्षण से संबंधित स्थिति बिन्दु को सुदृढ़ तथा मजबूत नहीं होने देता है फलतः पहले विषय का रूप या अंशिक विस्तार हो जाता है।

5. pro active Inhibition पूर्व प्रभावी अवरोध या अग्रकाली अवरोध अग्रकाली अवरोध की विस्तार का अनुभव प्राप्त है जब किसी पाठ या विषय को सीखने के बाद उसका प्रभाव कुछ दिनों जाता है तो इस समय इन विषयों या पाठों का काव्यर उपाय पड़ता है जो इससे पहले सीखा गया था इसी प्रकार के काव्यर की अग्रकाली अवरोध रहा जाता है। जिसे परिभाषित करते हुए हाउस्टन (Houston) ने अग्रकाली अवरोध को परिभाषित करते हुए बताया कि - ~~किसी पूर्व~~ pro active inhibition refers to losses in our ability to remember a given set of materials that may be attributed to the interfering effects of previously learned materials." यानि किसी पूर्व सीखे गए विषय का प्रभाव जब अन्य सीखे गए विषय के प्रभाव में काव्यर सिद्ध होता है तो इसे अग्रकाली अवरोध की संज्ञा दी जाती है।

7. Health स्वास्थ्य

विस्तार का एक कारण सीखने वाले व्यक्ति का स्वास्थ्य भी विस्तार का कारण है जब व्यक्ति प्रायः रोगग्रस्त या अस्वस्थ होता है तो सीखी गयी विषय से संबंधित स्थिति पढ़ने को अधिक प्यारे एवं ध्यान केंद्रित नहीं रह पाता है और ध्यान से अभ्यास के सीखे गए विषय का विस्तार हो जाता है।

8. Mental Set मानसिक दृष्टि

सीखने वाले व्यक्ति की प्रत्याशा तथा मानसिक दृष्टि भी विस्तार का कारण है। जब व्यक्ति को एक निश्चित समय के बाद पूर्व सीखे गए विषय का प्रभावण करने को कहा जाता है तो एसी स्थिति में प्रत्याक्षय के कारण हो जाता है और विस्तार कम बरतित होती है लेकिन जब किसी विषय व्यक्ति को पूर्व सीखे गए विषय का प्रभावण अन्याय या वैसे समय करने को कहा जाता है जब उसकी मानसिक दृष्टि प्रत्याक्षय करने की नहीं होती है या प्रभावण करने की प्रत्याशा नहीं होती है तो तब ही उसका प्रभावण नहीं हो पाता है फलतः विस्तार की मात्रा कम जाती है।

9. Emotional factor - भावनात्मक कारक -

सीखे गए विषय का प्रभावण करने समय व्यक्ति के भावनात्मक स्थिति का भी प्रभाव उत्पन्न पड़ता है। यदि प्रभावण करने समय व्यक्ति अधिक सहज हुआ, बड़बड़ाया हुआ या डरा हुआ होता है तो निश्चित रूप से वह पूर्ण प्रभावण नहीं हो पाएगा जिसका कारण विस्तार की मात्रा कम जाएगी।

10. Motivational factor अभिप्रेरणायक कारक

विस्तार की मात्रा व्यक्ति के अभिप्रेरणायक स्थिति पर भी निर्भर करती है। प्रायः किसी विषय को सीखने के लिये-कुछ उद्देश्य अभिप्रेरणायक अवश्य रहनी ही और जब व्यक्ति किसी प्रकार विषय को

प्रोटीन से ही लीज लेता है तो उसकी अभिवृत्त सकार हो जाती है।
 फलतः बुद्ध सत्य के ज्ञापक अब वह इस विषय में प्रथम कर्म
 की श्रेयता करता है तो सीधे तौर पर विषय के बहुत से अंशों
 को मूल अथा ही इसी तर्क अब व्यक्ति अपनी विषय को
 अच्छा सीखता किनी का प्रथम बात देता है तो उनमें
 पीछे ही बिना अभिवृत्त, ज्ञान तथा अभिरुची मत्त
 न होना कभी की कभी रहती है। ये अभिवृत्त तथा
 ज्ञान द्वारा विद्वत् के व्यक्ति व्यक्ति को अज्ञान बनाए (ब्रह्म) है।
 फलतः व्यक्ति से विषय को मूलता नहीं है।

~~इस उपसंहार विधानों से~~

शक्यता स्पष्ट हो जाता है कि विज्ञान के अर्थ
 ज्ञान है। अतः बुद्ध प्रमुख उपर वर्णित है।

व. १०